सनर इंटरनेशनल हॉस्पिटल्स ने दिया इराकी युवक को जीवनदान, सांस लेने व बोलने की क्षमता वापस लौटी

भास्कर समाचार सेवा

गुरुग्राम। 3 साल में 7 विफल सर्जरीज, लगातार इराक और भारत के अलग-अलग अस्पतालों के चक्कर, और दोबारा बोलने व सामान्य रूप से सांस लेने की खो चुकी उम्मीद के बाद 23 वर्षीय इराकी युवक अली की हिम्मत लगभग टूट चुकी थी। इस नाउम्मीदी में सनर इंटरनेशनल हॉस्पिटल्स ने आशा की एक नई किरण जगाई। यहाँ के अनुभवी डॉक्टरों की बदौलत अली की न केवल सांस लेने की क्षमता वापस लौट आई, बल्कि वे सर्जरी के ठीक अगले दिन बिना किसी रुकावट के बोलने भी लग गए। साढ़े तीन साल पहले इराक में हुई दुर्घटना में अली को गंभीर चोटें आईं। आईसीयू में इन्ट्यूबेशन (गले में सांस लेने की नाली डालना) के दौरान उनकी सब्लॉटिक एयरवे यानी गले से जुड़ी सांस लेने वाली नाली जख़्मी हो गई। परिणामस्वरूप अली मुंह व नाक से सांस लेने व बोलने की क्षमता खो बैठे। इसे इन्ट्यूबेशन ट्रॉमा एंड सेप्सिस कहते हैं। उसके बाद उन्होंने भारत व इराक के कई अस्पतालों में दस्तक दी लेकिन 7 सर्जरीज के बाद भी उन्हें नाउम्मीदी का ही सामना करना पड़ा। आखिरकार उन्होंने सनर इंटरनेशनल हॉस्पिटल्स की ओर रुख किया। शुरूवाती जांच के बाद पता चला वे ग्रेड-4 कम्पलीट सब्लॉटिक स्टेनोसिस से जूझ रहे हैं। डॉक्टर कुनाल निगम, एच. ओ. डी. एंड कंसल्टेंट, ई. एन. टी., कॉक्लियर इम्प्लांट एंड वॉइस डिसऑर्डर के अनुभवी मार्गदर्शन में बलून डायलेटेशन और कॉब्लेशन-असिस्टेड सब्लॉटिक स्टेनोसिस किया गया।